વીર સંવત ૨૫૦૨, જેઠ સુદ ૯, રવિવાર
તા. ૦૬-૦૬-૧૯૭૬, ગાથા-૧, પ્રવચન નં. ૧

આ 'પરમાત્મપ્રકાશ'. હમણાં ઘણાં વર્ષથી વાંચ્યું નથી. પુસ્તકો કો'ક પાસે હશે, કો'ક પાસે નથી. બહાર ક્યાંય મળતા નથી. આ 'યોગીન્દુદેવ' કૃત છે. 'યોગીન્દ્ર', 'યોગીન્દુ' એમ લખે છે. 'યોગીન્દ્ર'ની ના પાડે છે. 'યોગીન્દુ'.. એમ કહે છે. છઠ્ઠી શતાબ્દીમાં થયા છે, એમ કહે છે. ઈ.સ. ૬. અધ્યાત્મનો ગ્રંથ છે. જેમાં 'સમયસાર' આદિની એને ઘણી વાત લીધી છે. પણ એકલી અધ્યાત્મની ભાવનાનો ગ્રંથ, ભાવને ઘૂંટ્યો છે. 'છોટાભાઈ' આવ્યા નથી? કાલે આવ્યા હતા. સવારમાં આવી ગયા? સવારમાં આવી ગયા. બેય આંખે દેખાતું નથી. એવું છે.

'**ॐ श्री परमात्मने नमः श्रीमद्योगीन्दुदेवविरचितः**' 'પરમાત્મપ્રકાશ' એની ટીકાનો... 'બ્રહ્મદેવે' ટીકા કરેલી છે એ ટીકાનો પહેલો શ્લોક છે.

चिदानन्दैकरूपाय जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः।।१।।

હવે '**પંડિત દૌલતરામજી' પોતે થોડી ટીકા કરે છે. હિન્દી ટીકાકાર છે.**

દોહા :- **चिदानंद चिद्रूप जो, जिन परमातम देव।**
सिद्धरूप सुविसुद्ध जो, नमों ताहि करि सेव।।१।।

ચિદાનંદ, જ્ઞાનનંદ ચિદ્રૂપ આત્મા. ચિદાનંદ જ્ઞાનાનંદ અને ચિદ્રૂપ. એમ. જ્ઞાનાનંદરૂપ ચિદ્રૂપ. જિન પરમાત્મદેવ. વીતરાગ પરમાત્મદેવ. ચિદ્રૂપ '**सुविसुद्ध**' જે નિર્મળ પૂર્ણ દશા જેને પ્રગટ થઈ. '**नमों ताहि करि सेव**' તેની સેવા કરીને હું નમસ્કાર કરું છું. '**परमातम निजवस्तु जो**' પોતાની વસ્તુ જ પરમાત્મા છે. '**गुण अनंतमय शुद्ध**' જેના અનંત ગુણ છે. '**ताहि प्रकाशनके निमित्त**' તે પરમાત્માને પ્રકાશવાને કારણે '**वंदू देव प्रबुद्ध**' એવા દેવ ભગવાન પ્રબુદ્ધ જે સર્વજ્ઞપરમાત્મા છે, એને હું નમસ્કાર કરું છું.

હવે ટીકાનો અર્થ છે. '**શ્રી જિનેશ્વરદેવ શુદ્ધ પરમાત્મા આનંદરૂપ ચિદાનંદચિદ્રૂપ હૈ,...**' એણે એમ કહ્યું હતું, 'દૌલતરામે'. પણ આ 'બ્રહ્મદેવે', 'બ્રહ્મદેવ'...

'**શુદ્ધ પરમાત્મા આનંદરૂપ ચિદાનંદચિદ્રૂપ...**' એ તો એમાં જ છે. '**चिदानन्दैकरूपाय**' '**ઉનકે લિયે મેરા સદાકાલ નમસ્કાર હોવે, કિસ લિયે? પરમાત્માકે સ્વરૂપકે પ્રકાશનેકે લિયે. કૈસે હૈં વે ભગવાન? શુદ્ધ પરમાત્મસ્વરૂપકે પ્રકાશક હૈં, અર્થાત્ નિજ ઔર પર સબકે સ્વરૂપકો પ્રકાશતે હૈં. ફિર કૈસે હૈં? 'સિદ્ધાત્મને' જિનકા આત્મા કૃતકૃત્ય હૈ.**' સિદ્ધાત્મને કૃતકૃત્ય હૈ. '**સારાંશ યહ હૈ કિ નમસ્કાર કરને યોગ્ય પરમાત્મા હી હૈ, ઈસલિયે પરમાત્માકો**

નમસ્કાર કર પરમાત્મપ્રકાશનામા ગ્રંથકા વ્યાખ્યાન કરતા હૂં.' એમ ભાઈ 'દૌલતરામ' પોતે કહે છે. હવે એ બધી પછી. મૂળ શ્લોક લ્યો હવે. 'યોગીન્દુદેવ'નો મૂળ શ્લોક.

इदानीं प्रथमपातनिकाभिप्रायेण व्याख्याने क्रियमाणे ग्रन्थकारो ग्रन्थस्यादौ मङ्गलार्थमिष्टदेवतानमस्कारं कुर्वाणः सन् दोहकसूत्रमेकं *प्रतिपादयति–

(१) जे जाया झाणग्गियएँ कम्म–कलंक डहेवि।
णिच्च–णिरंजण–णाण–मय ते परमप्प णवेवि।।१।।

ये जाता ध्यानाग्निना कर्मकलङ्कान् दग्ध्वा।
नित्यनिरञ्जनज्ञानमयास्तान् परमात्मनः नत्वा।।१।।

जे जाया ये केचन कर्तारो महात्मानो जाता उत्पन्नाः। केन कारणभूतेन। झाणग्गियए ध्यानाग्निना। किं कृत्वा पूर्वम्। कम्मकलंक डहेवि – कर्मकलङ्कमलान् दग्ध्वा भस्मीकृत्वा। कथंभूताः जाताः। णिच्चणिरंजणणाणमय नित्यनिरञ्जनज्ञानमयाः ते परमप्प णवेवि तान्परमात्मनः कर्मतापन्नान्नत्वा प्रणम्येतितात्पर्यार्थव्याख्यानं समुदायकथनं संपिण्डितार्थ–निरूपणमुपोद्धातः संग्रहवाक्यं वार्तिकमिति यावत्। इतो विशेषः। तद्यथा–ये जाता उत्पन्ना मेघपटलविनिर्गतदिनकरकिरणप्रभावात्कर्मपटलविघटनसमये सकलविमलकेवलज्ञानाद्यनन्त–चतुष्टयव्यक्तिरूपेण लोकालोकप्रकाशनसमर्थेन सर्वप्रकारोपादेयभूतेन कार्यसमयसाररूप परिणताः। कया नयविवक्षया जाताः सिद्धपर्यायपरिणतिव्यक्तरूपतया धातुपाषाणे सुवर्णपर्यायपरिणति–व्यक्तिवत्। तथा चोक्तं पञ्चास्तिकायेपर्यायार्थिकनयेन ''अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो'', द्रव्यार्थिकनयेन पुनः शक्त्यप्रेक्षया पूर्वमेव शुद्धबुद्धैकस्वभावस्तिष्ठति धातुपाषाणे सुवर्णशक्तिवत्। तथा चोक्तं द्रव्यसंग्रहेशुद्धद्रव्यार्थिकनयेन 'सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया' सर्वे जीवाः शुद्धबुद्धैकस्वभावाः केन जाताः। ध्यानाग्निना करणभूतेन ध्यानशब्देन आगमापेक्षया वीतरागनिर्विकल्पशुक्लध्यानम्, अध्यात्मापेक्षया वीतरागनिर्विकल्परूपातीतध्यानम्। तथा चोक्तम्–'पदस्थं मन्त्रवाक्यस्थं पिण्डस्थं स्वात्मचिन्तनम्। रूपस्थं सर्वचिद्रूपं रूपातीतं निरञ्जनम्।।' तच्च ध्यानं वस्तुवृत्त्या शुद्धात्मसम्यक्श्रद्धानज्ञानानुष्ठानरूपाभेदरत्नत्रयात्मकनिर्विकल्पसमाधिसमुत्पन्नवीतरागपरमानन्दसमरसीभावसुखरसास्वादरूपमिति ज्ञातव्यम्। किं कृत्वा जाताः। कर्ममलकलङ्कान् दग्ध्वा कर्ममलशब्देन द्रव्यकर्मभावकर्माणि गृह्यन्ते। पुद्गलपिण्डरूपाणि ज्ञानावरणादीन्यष्टौ द्रव्यकर्माणि, रागादिसंकल्पविकल्परूपाणि पुनर्भावकर्माणि। द्रव्यकर्मदहनमनुपचरिता–सद्भूतव्यवहारनयेन, भावकर्मदहनं पुनरशुद्धनिश्चयेन शुद्धनिश्चयेन बन्धमोक्षौ न स्तः। इत्थंभूत–कर्ममलकलङ्कान् दग्ध्वा कथंभूता जाताः। नित्यनिरञ्जनज्ञानमयाः। क्षणिकैकान्तवा–

* પાઠાન્તર :– प्रतिपादयति = प्रतिपादयति। तद्यथा ––

दिसौगतमतानुसारिशिष्यं प्रति द्रव्यार्थिकनयेन नित्यटङ्कोत्कीर्णज्ञायकैकस्वभाव-परमात्मद्रव्यव्यवस्थापनार्थं नित्यविशेषणं कृतम्। अथ कल्पशते गते जगत् शून्यं भवति पश्चात्सदाशिवे जगत्करणविषये चिन्ता भवति तदन्तरं मुक्तिगतानां जीवानां कर्माञ्जनसंयोगं कृत्वा संसारे पतनं करोतीति नैयायिका वदन्ति, तन्मतानुसारिशिष्यं प्रति भावकर्मद्रव्यकर्म-नोकर्माञ्जननिषेधार्थं मुक्तजीवानां निरञ्जनविशेषणं कृतम्। मुक्तात्मनां सुप्तावस्थाबद्ध-हिर्ज्ञेयविषये परिज्ञानं नास्तीति सांख्या वदन्ति, तन्मतानुसारिशिष्यं प्रति जगत्त्रयकालत्रयवर्ति-सर्वपदार्थयुगपत्परिच्छित्तिरूपकेवलज्ञानस्थापनार्थं ज्ञानमयविशेषणं कृतमिति। तानित्थंभूतान् परमात्मनो नत्वा प्रणम्य नमस्कृत्येति क्रियाकारकसंबन्धः। अत्र नत्वेति शब्दरूपो वाचनिको द्रव्यनमस्कारो ग्राह्योऽसद्भूतव्यवहारनयेन ज्ञातव्यः, केवलज्ञानाद्यनन्तगुणस्मरणरूपो भावनमस्कारः पुनरशुद्धनिश्चयनयेनेति, शुद्धनिश्चयनयेन वन्द्यवन्दकभावो नास्तीति। एवं पदखण्डनारूपेण शब्दार्थः कथितः, नयविभागकथनरूपेण नयार्थोऽपि भणितः, बौद्धादिमतस्वरूपकथनप्रस्तावे मतार्थोऽपि निरूपितः, एवंगुणविशिष्टाः सिद्धा मुक्ताः सन्तीत्यागमार्थः प्रसिद्धः। अत्र नित्यनिरञ्जनज्ञानमयरूपं परमात्मद्रव्यमुपादेयमिति भावार्थः। अनेन प्रकारेण शब्दनयमतागमभावार्थो व्याख्यानकाले यथासंभवं सर्वत्र ज्ञातव्य इति।।१।।

अब, प्रथम पातनिकाके अभिप्रायसे व्याख्यान किया जाता है, उसमें ग्रंथकर्ता श्री योगीन्द्राचार्यदेव ग्रंथके आरंभमें मंगलके लिए इष्टदेवता श्री भगवानको नमस्कार करते हुए एक दोहा छंद कहते हैं।

प्रथम महाधिकार
गाथा-१

अन्वयार्थ :- [ये] जो भगवान् [ध्यानाग्निना] ध्यानरूपी अग्निसे [कर्मकलङ्कान्] पहले कर्मरूपी मैलोंको [दग्ध्वा] भस्म करके [नित्यनिरंजनज्ञानमयाः जाताः] नित्य, निरंजन और ज्ञानमयी सिद्ध परमात्मा हुए हैं, [तान्] उन [परमात्मनः] सिद्धोंको [नत्वा] नमस्कार करके मैं परमात्मप्रकाशका व्याख्यान करता हूँ। यह संक्षेप व्याख्यान किया।

भावार्थ :- जैसे मेघ-पटलसे बाहर निकली हुई सूर्यकी किरणोंकी प्रभा प्रबल होती है, उसी तरह कर्मरूप मेघसमूहके विलय होनेपर अत्यंत निर्मल केवलज्ञानादि अनंतचतुष्टयकी प्रगटतास्वरूप परमात्मा परिणत हुए हैं। अनंतचतुष्टय अर्थात् अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतसुख, अनंतवीर्य, ये अनंतचतुष्टय सब प्रकार अंगीकार करने योग्य हैं, तथा लोकालोकके प्रकाशनको समर्थ हैं। जब सिद्धपरमेष्ठी अनंतचतुष्टयरूप परिणमे, तब कार्य-समयसार हुए। अंतरात्म अवस्थामें कारण-समयसार थे। जब कार्यसमयसार हुए तब सिद्धपर्याय परिणतिकी प्रगटता रूपकर शुद्ध परमात्मा हुए। जैसे सोना अन्य धातुके मिलापसे रहित हुआ, अपने सोलहवानरूप

प्रगट होता है, उसी प्रकार कर्म–कलंक रहित सिद्धपर्यायरूप परिणमे। तथा पंचास्तिकाय ग्रंथमें भी कहा है – जो पर्यायार्थिकनयकर 'अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो' अर्थात् जो पहले सिद्धपर्याय कभी नहीं पाई थी, वह कर्म–कलंक के विनाशसे पाई। यह पर्यायार्थिकनयकी मुख्यतासे कथन है और द्रव्यार्थिकनयकर शक्तिकी अपेक्षा यह जीव सदा ही शुद्ध बुद्ध (ज्ञान) स्वभाव तिष्ठता है। जैसे धातु पाषाणके मेलमें भी शक्तिरूप सुवर्ण मौजूद ही है, क्योंकि सुवर्ण–शक्ति सुवर्णमें सदा ही रहती है, जब परवस्तुका संयोग दूर हो जाता है, तब वह व्यक्तिरूप होता है। सारांश यह है कि शक्तिरूप तो पहले ही था, लेकिन व्यक्तिरूप सिद्धपर्याय पाने से हुआ। शुद्ध द्रव्यार्थिकनयकर सभी जीव सदा शुद्ध ही हैं। ऐसा ही द्रव्यसंग्रहमें कहा है, 'सव्वे सुद्धाहु सुद्धणया' अर्थात् शुद्ध नयकर सभी जीव शक्तिरूप शुद्ध हैं और पर्यायार्थिकनयसे व्यक्तिकर शुद्ध हुए। किस कारणसे? ध्यानाग्निना अर्थात् ध्यानरूपी अग्निकर कर्मरूपीकलंकोंको भस्म किया, तब सिद्ध परमात्मा हुए। वह ध्यान कौनसा है? आगमकी अपेक्षा तो वीतराग निर्विकल्प शुक्लध्यान है और अध्यात्मकी अपेक्षा वीतराग निर्विकल्प रूपातीत ध्यान है। तथा दूसरी जगह भी कहा है – 'पदस्थं' इत्यादि, उसका अर्थ यह है, कि णमोकारमंत्र आदिका जो ध्यान है, वह पदस्थ कहलाता है, पिंड (शरीर) में ठहरा हुआ जो निज आत्मा है, उसका चिंतवन वह पिंडस्थ है, सर्व चिद्रूप (सकल परमात्मा) जो अरहंतदेव उनका ध्यान वह रूपस्थ है, और निरंजन (सिद्धभगवान्) का ध्यान रूपातीत कहा जाता है। वस्तुके स्वभावसे विचारा जावे, तो शुद्ध आत्माका सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्ररूप अभेद रत्नत्रयमई जो निर्विकल्प समाधि है, उससे उत्पन्न हुआ वीतराग परमानंद समरसी भाव सुखरसका आस्वाद वही जिसका स्वरूप है, ऐसा ध्यानका लक्षण जानना चाहिये। इसी ध्यानके प्रभावसे कर्मरूपी मैल वही हुआ कलंक, उनको भस्मकर सिद्ध हुए। कर्म–कलंक अर्थात् द्रव्यकर्म भावकर्म इनमेंसे जो पुद्गलपिंडरूप ज्ञानावरणादि आठ कर्म वे द्रव्यकर्म हैं, और रागादिक संकल्प–विकल्प परिणाम भावकर्म कहे जाते हैं। यहाँ भावकर्मका दहन अशुद्ध निश्चयनयकर हुआ, तथा द्रव्यकर्मका दहन असद्भुत अनुपचरितव्यवहारनयकर हुआ और शुद्ध निश्चयकर तो जीवके बंध मोक्ष दोनों ही नहीं है। इस प्रकार कर्मरूपमलोंको भस्मकर जो भगवान हुए, वे कैसे हैं? वे भगवान सिद्ध परमेष्ठी नित्य निरंजन ज्ञानमई हैं। यहाँपर नित्य जो विशेषण किया है, वह एकान्तवादी बौद्ध जो कि आत्माको नित्य नहीं मानता, क्षणिक मानता है, उसको समझानेके लिये है। द्रव्यार्थिकनयकर आत्माको नित्य कहा है, टंकोत्कीर्ण अर्थात् टाँकीकासा घड्या सुघट ज्ञायक एकस्वभाव परम द्रव्य है। ऐसा निश्चय करानेके लिये नित्यपनेका निरूपण किया है। इसके बाद निरंजनपनेका कथन करते हैं। जो नैयायिकमती हैं वे ऐसा कहते हैं 'सौ कल्पकाल चले जानेपर जगत् शून्य हो जाता है और सब जीव उस समय मुक्त हो जाते हैं तब सदाशिवको जगत् के करनेकी चिन्ता होती है। उसके बाद जो मुक्त हुए थे, उन सबके कर्मरूप अंजनका संयोग करके संसारमें पुनः डाल देता है', ऐसी नैयायिकोंके श्रद्धा

है। उनके सम्बोधनेके लिये निरंजनपनेका वर्णन किया कि भावकर्म–द्रव्यकर्म–नोकर्मरूप अंजनका संसर्ग सिद्धोंके कभी नहीं होता। इसी लिये सिद्धोंको निरंजन ऐसा विशेषण कहा है। अब सांख्यमती कहते हैं – 'जैसे सोनेकी अवस्थामें सोते हुए पुरुषको बाह्य पदार्थोंका ज्ञान नहीं होता, वैसे ही मुक्तजीवोंको बाह्य पदार्थोंका ज्ञान नहीं होता है।' ऐसे जो सिद्धदशामें ज्ञानका अभाव मानते है, उनको प्रतिबोध करानेके लिये तीन जगत् तीनकालवर्ती सब पदार्थोंका एक समयमें ही जानना है, अर्थात् जिसमें समस्त लोकालोकके जाननेकी शक्ति है, ऐसे ज्ञायकतारूप केवलज्ञानके स्थापन करनेके लिये सिद्धोंका ज्ञानमय विशेषण किया। वे भगवान नित्य हैं, निरंजन हैं, और ज्ञानमय हैं, ऐसे सिद्धपरमात्माओंको नमस्कार करके ग्रंथका व्याख्यान करता हूँ। यह नमस्कार शब्दरूप वचन द्रव्यनमस्कार है और केवलज्ञानादि अनंत गुणस्मरणरूप भावनमस्कार कहा जाता है। यह द्रव्य–भावरूप नमस्कार व्यवहारनयकर साधक–दशामें कहा है, शुद्धनिश्चयनयकर वंद्य–वंदक भाव नहीं है। ऐसे पदखंडनारूप शब्दार्थ कहा और नयविभागरूप कथनकर नयार्थ भी कहा, तथा बौद्ध, नैयायिक, सांख्यादि मतके कथन करनेसे मतार्थ कहा, इस प्रकार अनंतगुणात्मक सिद्धपरमेष्ठी संसारसे मुक्त हुए हैं, यह सिद्धांतका अर्थ प्रसिद्ध ही है, और निरंजन ज्ञानमई परमात्माद्रव्य आदरने योग्य है, उपादेय है, यह भावार्थ है, इसी तरह शब्द नय, मत, आगम, भावार्थ व्याख्यानके अवसर पर सब जान लेना।।१।।

---

(૧)
પ્રથમ મહાધિકાર

હવે પ્રથમ પાતનિકાના અભિપ્રાય પ્રમાણે વ્યાખ્યાન કરવામાં આવતાં, ગ્રંથકાર શ્રીયોગીન્દ્રાચાર્ય ગ્રંથની આદિમાં મંગળ અર્થે ઈષ્ટદેવતાને (શ્રી સિદ્ધપરમાત્માને) નમસ્કાર કરતા થકા એક દોહકસૂત્ર કહે છે :

ભાવાર્થ : જેવી રીતે મેઘપટલમાંથી નીકળેલા સૂર્યનાં કિરણોની પ્રભા પ્રગટ થઈ છે તેવી રીતે જેઓ કર્મપટલના વિલય ટાણે (કર્મરૂપી મેઘપટલનો વિલય થતાં) સકલ વિમલ કેવળજ્ઞાનાદિ અનંતચતુષ્ટયની વ્યક્તિરૂપ, લોકાલોકને પ્રકાશવાને સમર્થ, સર્વપ્રકારે ઉપાદેયભૂત કાર્યસમયસારરૂપ પરિણમ્યા છે. ક્યા નયની વિવક્ષાથી (તેઓ કાર્યસમયસારરૂપ સિદ્ધપરમાત્મા) થયા છે? જેવી રીતે ધાતુપાષાણ સુવર્ણપર્યાયરૂપ પરિણતિની પ્રગટતારૂપે થયો છે તેવી રીતે તેઓ સિદ્ધપર્યાયરૂપ પરિણતિની પ્રગટતારૂપે થયા છે, શ્રી પંચાસ્તિકાય (ગાથા-૨૦)માં કહ્યું છે કે :

પર્યાયાર્થિકનયથી 'अभूद्पुव्वो हवदि सिद्धो' (જીવ અભૂતપૂર્વ સિદ્ધ થાય છે), દ્રવ્યાર્થિકનયથી તો જેવી રીતે ધાતુપાષાણમાં સુવર્ણ શક્તિરૂપે રહેલ છે તેવી રીતે, શક્તિ-અપેક્ષાએ જીવ પ્રથમથી જ શુદ્ધ, બુદ્ધ એક સ્વભાવવાળો છે. દ્રવ્યસંગ્રહ (ગાથા-૧૩૩)માં

કહ્યું છે કે 'सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया' શુદ્ધ દ્રવ્યાર્થિકનયથી (શુદ્ધનયથી) સર્વ સંસારી જીવો શુદ્ધ બુદ્ધ એકસ્વભાવવાળા છે.

શા કારણથી (તેઓ કાર્યસમયસારરૂપ સિદ્ધ પરમાત્મા થયા છે) ? કરણરૂપ ધ્યાનાગ્નિ વડે (તેઓ કાર્યસમયસારરૂપ સિદ્ધ પરમાત્મા થયા છે). 'ધ્યાન' શબ્દથી આગમની અપેક્ષાએ વીતરાગ નિર્વિકલ્પ શુક્લધ્યાન અને અધ્યાત્મની અપેક્ષાએ વીતરાગ નિર્વિકલ્પ રૂપાતીતધ્યાન સમજવું. કહ્યું છે કે (બૃહત દ્રવ્યસંગ્રહ ગાથા ૪૮ની ટીકા) * 'पदस्थं मन्त्रवाक्यस्थं पिंण्डस्थं स्वात्मचिन्तनम्। रूपस्थं सर्वचिद्रूपं रूपातीतं निरञ्जनम्।।' (અર્થ : મંત્રવાક્યોમાં સ્થિત તે 'પદસ્થ' ધ્યાન છે, નિજ આત્માનું ચિંતન તે 'પિંડસ્થ' ધ્યાન છે; સર્વચિદ્રૂપનું ચિંતન તે 'રૂપસ્થ' ધ્યાન છે અને નિરંજનનું ધ્યાન તે રૂપાતીત ધ્યાન છે.) અને તે ધ્યાન વસ્તુવૃત્તિથી શુદ્ધ આત્માનાં સમ્યક્શ્રદ્ધાન, સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યક્અનુષ્ઠાનરૂપ અભેદ રત્નત્રયાત્મક નિર્વિકલ્પ સમાધિથી સમુત્પન્ન વીતરાગ પરમાનંદમય સમરસીભાવસુખરસના આસ્વાદરૂપ છે એમ જાણવું.

શું કરીને (તેઓ કાર્યસમયસારરૂપ સિદ્ધ પરમાત્મા) થયા છે? કર્મમળરૂપ કલંકોને દગ્ધ કરીને (તેઓ કાર્યસમયસારરૂપ સિદ્ધ પરમાત્મા થયા છે.) અહીં 'કર્મમળ' શબ્દથી દ્રવ્યકર્મો અને ભાવકર્મો સમજવાં. પુદ્ગલપિંડરૂપ જ્ઞાનાવરણાદિ આઠ દ્રવ્યકર્મો છે અને રાગાદિસંકલ્પવિકલ્પરૂપ ભાવકર્મો છે. દ્રવ્યકર્મોનું દહન અનુપચરિત અસદ્ભૂત વ્યવહારનયથી છે અને ભાવકર્મોનું દહન અશુદ્ધ નિશ્ચયનયથી છે, શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી તો બંધમોક્ષ નથી.

આવા કર્મમળરૂપી કલંકોને દગ્ધ કરીને તેઓ કેવા થયા છે? આવા કર્મમળરૂપી કલંકોને દગ્ધ કરીને તેઓ નિત્ય નિરંજન જ્ઞાનમય થયા છે (૧) ક્ષણિક એકાંતવાદી સૌગત (બૌદ્ધ) મતને અનુસરનાર શિષ્ય પ્રતિ દ્રવ્યાર્થિકનયથી નિત્ય ટંકોત્કીર્ણ જ્ઞાયક એક જેનો સ્વભાવ છે એવા પરમાત્મદ્રવ્ય છે એમ સ્થાપવા માટે 'નિત્ય' વિશેષણ આપવામાં આવ્યું છે, (૨) સો કલ્પકાળ ગયા પછી જગત શૂન્ય થાય છે ત્યારે સદાશિવને જગત રચવાની ચિંતા થાય છે. ત્યાર પછી તે મુક્તિપ્રાપ્ત જીવોને કર્મરૂપ અંજનનો સંયોગ કરીને સંસારમાં નાખે છે એમ નૈયાયિકો કહે છે. તેના મતને અનુસરનાર શિષ્ય પ્રતિ ભાવકર્મ, દ્રવ્યકર્મ અને નોકર્મરૂપ અંજનના નિષેધ અર્થે મુક્ત જીવોને 'નિરંજન' વિશેષણ આપવામાં આવ્યું છે, (૩) જેવી રીતે સુપ્ત અવસ્થામાં પુરુષને બાહ્ય જ્ઞેયવિષયનું જ્ઞાન હોતું નથી તેવી રીતે મુક્ત આત્માઓને બાહ્ય જ્ઞેયવિષયનું જ્ઞાન હોતું નથી એમ સાંખ્યો કહે છે. તેના મતને અનુસરનાર શિષ્ય પ્રતિ ત્રણે જગતના, ત્રણે કાળવર્તી સર્વ પદાર્થના યુગપત્ પરિચ્છિત્તિરૂપ કેવળજ્ઞાન છે એમ સ્થાપવા માટે 'જ્ઞાનમય' વિશેષણ આપવામાં આવ્યું છે.

---

* બૃહત દ્રવ્યસંગ્રહ ગાથા ૪૮ની ટીકા.

એવા તે પરમાત્માઓને નમીને-પ્રણમીને-નમસ્કાર કરીને, એવો ક્રિયાકારક સંબંધ છે. અહીં नत्वा' એવું શબ્દરૂપ વાચક દ્રવ્યનમસ્કાર અસદ્‌ભૂત વ્યવહારનયથી જાણવો અને કેવળજ્ઞાનાદિ અનંતગુણના સ્મરણરૂપ ભાવનમસ્કાર અશુદ્ધ નિશ્ચયનયથી જાણવો, શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી વંદ્યવંદકભાવ નથી.

આ પ્રમાણે પદખંડનારૂપે શબ્દાર્થ કહ્યો, નયવિભાગના કથનરૂપે નયાર્થ કહ્યો, બૌદ્ધાદિના મતોના સ્વરૂપના કથનના અવસર પર મતાર્થ પણ કહ્યો.

આવા ગુણવિશિષ્ટ સિદ્ધો મુક્ત છે એવો આગમાર્થ પ્રસિદ્ધ છે.

અહીં નિત્ય, નિરંજન અને જ્ઞાનમયરૂપ પરમાત્મદ્રવ્ય ઉપાદેય છે એવો ભાવાર્થ છે.

આ રીતે શબ્દ, નય, મત, આગમ અને ભાવાર્થ વ્યાખ્યાનકાળે યથાસંભવ સર્વત્ર જાણવા. ૧.

ગાથા-૧ ઉપર પ્રવચન

હવે એ બધી પછી.. મૂળ શ્લોક લ્યો હવે. ..દેવનો મૂળ શ્લોક.

(१) जे जाया झाणग्गियएँ कम्म-कलंक डहेवि।
णिच्च-णिरंजण-णाण-मय ते परमप्प णवेवि।।१।।
ये जाता ध्यानाग्निना कर्मकलङ्कान् दग्ध्वा।
नित्यनिरञ्जनज्ञानमयास्तान् परमात्मनः नत्वा।।१।।

એનો અર્થ નીચે છે. '**શ્રી યોગીન્દ્રાચાર્યદેવ ગ્રંથકે આરંભમેં મંગલકે લિયે ઈષ્ટદેવતા શ્રી ભગવાનકો નમસ્કાર કરતે હુએ એક દોહા છંદ કહતે હૈં.**' જોડે હોય એણે ધ્યાન રાખવું. બધાને આવું પુસ્તક મળે એવું નથી. '**જો ભગવાન ધ્યાનરૂપી અગ્નિસે...**' ન્યાયથી શરૂ કર્યું છે. એ પરમાત્મા થયા કેમ? કહે છે. આહાહા..! એ શુદ્ધ ચૈતન્યઘનનું ધ્યાન કરીને થયા છે. આહાહા..! જેમ પીપરના દાણામાં ચોસઠપહોરી તિખાશ છે એ ઘૂંટતા એમાંથી બહાર આવે છે. એમ ભગવાનઆત્મા જેની શક્તિમાં અનંતજ્ઞાન, આનંદ (છે). આત્માની શક્તિ એટલે વસ્તુનો સ્વભાવ સામર્થ્ય એ અનંત જ્ઞાન-દર્શન છે એનું ધ્યાન કર્યું. છે ને? ધ્યાનરૂપી અગ્નિ પર્યાય છે. વસ્તુ ત્રિકાળ અનંતજ્ઞાન, આનંદ છે. એનું ધ્યાન કર્યું એટલે ધ્યાનમાં ધ્યેય વસ્તુને પૂર્ણાનંદને બનાવી અને જેનું ધ્યાનાગ્નિ વડે '**પહલે કર્મરૂપી મૈલોંકો ભસ્મ કરકે...**' એનો અર્થ એ થયો કે કર્મ હતા. મેલની અશુદ્ધતા પણ હતી. અશુદ્ધતા નહોતી અને દશામાં શુદ્ધ જ છે એમ નથી.

તેથી કહ્યું, '**કર્મરૂપી મૈલોંકો ભસ્મ કરકે નિત્ય, નિરંજન ઔર જ્ઞાનમયી સિદ્ધ પરમાત્મા હુએ હૈં,...**' આહાહા..! નિત્ય-નિરંજન. છે તો પર્યાય કેવળજ્ઞાન. સિદ્ધપદ છે તો અવસ્થા, પણ એ કાયમ રહેનારી છે એ અપેક્ષાએ એને નિત્ય કહ્યું. '**નિત્ય, નિરંજન ઔર**

જ્ઞાનમયી સિદ્ધ પરમાત્મા હુએ હૈં,...' આહાહા..! 'પંચાસ્તિકાય'માં કહ્યું છે ને કેવળજ્ઞાન કૂટસ્થ છે. કૂટસ્થ 'પંચાસ્તિકાય'માં. છે તો પરિણમન. પણ કૂટસ્થ નામ જેવો જ્ઞાનસ્વભાવ ત્રિકાળ કૂટસ્થ છે એ ધ્રુવ. એના ધ્યાનથી પ્રગટેલી દશા એવી ને એવી કાયમ રહે છે તેથી તેને કૂટસ્થ અને નિત્ય કહેવામાં આવે છે. સમજાણું કાંઈ? છે આ પર્યાયની વ્યાખ્યા-અવસ્થા.

આત્મા આનંદસ્વરૂપ ભગવાન અને અનંત જ્ઞાનના સામર્થ્યવાળો પદાર્થ પ્રભુ, એની શક્તિ-સામર્થ્ય જ અનંત છે. જ્ઞાન-દર્શન-આનંદ, એનું ધ્યાન કરીને એટલે કે એની સન્મુખતામાં લીન થઈને જેણે કર્મકલંકને બાળ્યા. એમ કરીને એમ પણ કહ્યું કે કોઈ વ્રત અને તપના વિકલ્પથી કર્મ બળે એમ છે નહિ. સમજાણું કાંઈ?

મુમુક્ષુ :- જીવની શુદ્ધ પર્યાયથી પુદ્‌ગલ કેમ બળે? પુદ્‌ગલ તો પરપદાર્થ છે.

ઉત્તર :- પુદ્‌ગલ (એટલે) અહીંયાં અશુદ્ધતાનો નાશ કર્યો. કર્મનો નાશ કહેવો એ તો નિમિત્તથી કથન છે. એ કહેશે, ઈ કહેશે. નય ઉતારશે. એ અસદ્‌ભૂત વ્યવહારનયથી કહેવામાં આવે છે. અને મલિનતાનો નાશ કર્યો એ અશુદ્ધ નિશ્ચયનયથી કહેવામાં આવે છે. નય ઉતારશે. સમજાણું કાંઈ?

ખરેખર શુદ્ધ ચૈતન્યઘન પ્રભુ પૂર્ણાનંદનો પાટલો પ્રભુ છે. જેમ આ બરફની પાટ હોય છે કે નહિ ? હમણાં ત્યાં 'કુંડલા'માં જોઈ હતી. પાંચ મણ, દસ મણની પાટ. પચાસ મણની પાટું. 'મુંબઈ'માં પચાસ-પચાસ મણની પાટું. ઓલામાં શું કહેવાય તમારે? મોટરું, ખટારા. ખટારામાં જાતી હોય પચાસ-પચાસ મણની પાટ. એકલી શીતળ સ્વભાવથી ભરેલી. એમ આ ભગવાનઆત્મા, એકલો શાંતરસ અને આનંદરસથી ભરેલી પાટ છે. આહાહા..! ભલે એનું કદ શરીર પ્રમાણે હો. પણ એનો સ્વભાવ તો આનંદ અને જ્ઞાનનું દળ પડ્યું છે આખું. આહાહા..! એના જેણે ધ્યાન કર્યા. એનો અર્થ એ થયો કે સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્ર એ બધી ધ્યાનની પર્યાય છે.

મુમુક્ષુ :- ધ્યાન તો ચારિત્ર છે.

ઉત્તર :- એ ચારિત્ર ધ્યાનની જ પર્યાય છે બધી.

ધ્યાનાગ્નિ એટલે દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્ર ત્રણ મોક્ષમાર્ગ. એના ધ્યાનાગ્નિ દ્વારા...આહાહા..! અશુદ્ધ વિકારનો નાશ કર્યો. એ અશુદ્ધ નિશ્ચયનયથી. અને કર્મનો નાશ કર્યો એ અસદ્‌ભૂત વ્યવહારનયથી કહેવાય છે. આરે! આવી નયની વ્યાખ્યા છે. '**નિત્ય, નિરંજન...**' જેણે આત્માના ધ્યાન કરીને જે નિરંજન, નિત્ય, શુદ્ધ ચૈતન્ય હતો, જે ધ્રુવ નિત્ય નિરંજન ધ્રુવ હતો, એનું ધ્યાન કરીને દશામાં જેણે '**નિત્ય, નિરંજન ઔર જ્ઞાનમયી સિદ્ધ પરમાત્મા હુએ હૈં,...**' આહાહા..! જ્ઞાનની પ્રધાનતા વર્ણવી છે ને.

પરમાત્મા કેવળજ્ઞાનમય, એકલા જ્ઞાનમય, પૂર્ણાનંદમય, શાંતમય, સ્વચ્છતામય, પ્રભુતામય '**પરમાત્મા હુએ હૈં,...**' આ પરમાત્મા જેટલા થયા (એ) આ વિધિથી થયા છે. સમજાય છે કાંઈ? આહાહા..! '**ઉન સિદ્ધોંકો નમસ્કાર કરકે...**' એવા સિદ્ધ ભગવાન. એ સિદ્ધ ભગવાન કેમ થયા એની વ્યાખ્યા આપી ભેગી. સમજાણું કાંઈ? એ વસ્તુ

ભગવાનઆત્મા નિત્ય ધ્રુવ અનંતજ્ઞાન ને અનંતઆનંદ ને અનંતસ્વચ્છતાના સ્વભાવનું દળ-પિંડ પ્રભુ, એનું ધ્યાન કરીને... આહાહા..! એને દૃષ્ટિમાં લઈને, એને જ્ઞાનની પર્યાયમાં જ્ઞેય બનાવીને...આહાહા..! જેણે સ્વરૂપમાં ધ્યાનથી એટલે સ્થિરતા દ્વારા, સિદ્ધપદ જ્ઞાનમય નિત્ય નિરંજન થયા. એટલે ઉપાય પણ સાથે બતાવ્યો. મોક્ષનો ઉપાય શું? કે મોક્ષ થયો એ આ ઉપાયે થયા, માટે મોક્ષનો ઉપાય એ છે. આહાહા..!

આત્મા આનંદ અને જ્ઞાનસ્વરૂપી દળ પ્રભુ છે. એનું જેણે ધ્યાન કર્યું, એની સામું જોઈને ઠર્યા. એને અશુદ્ધ મલિનતાના ભાવનો નાશ થાય છે. કર્મ જડનો, એ રૂપે કર્મ છે તેની અકર્મ દશા થઈ જાય છે. એ નિમિત્તથી કથન છે. એટલે શું? કર્મની અવસ્થાનું ટળવું એ કાંઈ આત્માને આધીન નથી. એ કર્મની અવસ્થાનો અકર્મરૂપ થવાનો એનો કાળ હતો. આહાહા..! અને અહીંયા અશુદ્ધતા નાશ થવાનો કાળ હતો. ત્યારે શુદ્ધતાના ધ્યાનમાં ઠરીને અશુદ્ધતા નાશ કરી અને કર્મનો નાશ કર્યો એમ વ્યવહારે કહેવામાં આવે છે. આહાહા..! આવી વાતો હવે. એ રીતે સિદ્ધ થયા એને અમારો નમસ્કાર!

આ ણમો અરિહંતાણં આવે છે કે નહિ? એનો એવો અર્થ છે. એ અરિહંતનું પછી લેશે. શાસ્ત્રમાં તો એવું ચાલે છે કે ણમો લોએ ત્રિકાળવર્તી અરિહંતાણં. અત્યારે તો ણમો અરિહંતાણં એટલું ચાલે છે. છેલ્લું ણમો લોએ સવ્વ સાહુણં આવે છે ને? એ બધાને લાગુ પડે છે. ણમો લોએ સવ્વ અરિહંતાણં. ણમો લોએ સવ્વ સિદ્ધાણં, ણમો લોએ સવ્વ આઈરિયાણં, ણમો લોએ સવ્વ ઉવજ્ઝાયાણાં, ણમો લોએ સવ્વ સાહુણં. પણ એથી ઉપરાંત સિદ્ધાંતમાં તો એવું વધારે ચાલે છે કે ણમો લોએ ત્રિકાળવર્તી સવ્વ અરિહંતાણં. આહાહા..! જે અરિહંત ભવિષ્યમાં થશે. ભૂતકાળમાં થયા, અત્યારે છે અને થશે. આહાહા..! જે હજી અરિહંત, એનો જીવ અત્યારે તો ક્યાંક નરક અને નિગોદમાં પડ્યો હશે. આહાહા..! પણ ભવિષ્યમાં તેની દશા થવાની છે, એને પણ પરમાત્મા એમ કહે છે કે ણમો લોએ-નમસ્કાર હો લોકને વિષે. ત્રિકાળવર્તી સવ્વ અરિહંતાણં. ત્રણે કાળમાં વર્તનારા અરિહંતોને મારો નમસ્કાર હો. સમજાણું કાંઈ? આહાહા..! પોતે પણ અરિહંત થવાનો છે તેનો નમસ્કાર અત્યારે આવી જાય છે. એય..! આહાહા..! સમજાય છે કાંઈ?

ણમો લોએ ત્રિકાળવર્તી સવ્વ અરિહંતાણં. 'ધવલ'માં એવો સિદ્ધાંતપદ છે. જે પરંપરામાં આવેલા આગમો, સિદ્ધાંતો સર્વજ્ઞ અનુસારીણી, એ વાણીમાં આ આવ્યું હતું. આહાહા..! કેટલી વિશાળતા! હું તો ત્રણે કાળના સર્વ વર્તનારા, વર્ત્યા અને વર્તશે... આહાહા..! એને મારો નમસ્કાર. 'જયંતિભાઈ'! આ સાંભળ્યું છે કે નહિ? આપણે કહેવાય ગયું છે અહીંયાં તો. પહેલું અહીં નથી. પણ રવિવારે આવવું તમારે. તે દિ' હોય ન હોય. આહાહા..! ણમો લોએ ત્રિકાળવર્તી સવ્વ સિદ્ધાણં. આવી ગયા કહે છે. નમસ્કાર હો લોકને વિશે. જેણે ધ્યાનાગ્નિ દ્વારા, વ્રત ને ક્રિયા ને બહારના તપ દ્વારા નહિ, અનશન, ઉણોદરી આદિ બહારનો તપ તો વિકલ્પ છે.

મુમુક્ષુ :- ક્રિયાનયથી પણ થાય છે.

ઉત્તર :- ધૂળેય થતું નથી. આ ક્રિયાથી થાય છે. આ ક્રિયા-આનંદની ક્રિયા. શુભથી

થાતું નથી. એ શુભ આને શુભ કહે છે. એને શુભ કહે છે. પુણ્ય-પાપમાં આવે છે ને? આહાહા..!

ભગવાન આનંદ અને જ્ઞાનનો સાગર પ્રભુ, એક એક આત્મા અનંતજ્ઞાન, અનંતશાંતિ, અનંતસ્વચ્છતા, અનંતપ્રભુતા એ એની શક્તિ છે. એટલે કે એ એનું સામર્થ્ય છે. એટલે કે એ એનો ગુણ છે, એટલે કે એનો સ્વભાવ છે, એટલે કે એ સત્‌નું એવું સત્ત્વ છે એવડું. આહાહા..! એવા સત્ત્વનું જેણે ધ્યાન કર્યું. આહાહા..! સમ્યગ્દર્શન એ પણ એક ધ્યાનની પર્યાય છે. સ્વ ઉપરની એકાગ્રતા. પૂર્ણ અનંત આનંદસ્વરૂપ, એનું વર્તમાન જ્ઞાનની પર્યાયમાં પૂર્ણ વસ્તુનું જ્ઞાન થઈને.. એક સમયની પર્યાયમાં પૂર્ણ સ્વરૂપ દ્રવ્યનો ગુણ, એનું જ્ઞાન થઈને, જે પર્યાયમાં-અવસ્થામાં જ્ઞેય જણાણું, એ જણાણું એની શ્રદ્ધા એનું નામ સમ્યગ્દર્શન. એ પણ જણાણાની એકાગ્રતાની સાથે દર્શન થયું. આહાહા..! વીતરાગનો માર્ગ ભાઈ બહુ એવો ઝીણો. લોકોએ તો બહારમાં રગડી નાખીને, મારી નાખીને ચૂંથી નાંખ્યો છે. આહાહા..!

એવો જે ભગવાનઆત્મા ત્રણે કાળે જેને સિદ્ધપદ પ્રાપ્ત થયું અને થશે એને મારા નમસ્કાર! ઓહોહો..! ગયા કાળના અનંત સિદ્ધ થયા. સિદ્ધપદ વિનાનો કોઈ કાળ નથી કે ભાઈ, આ સિદ્ધ નવા થયા અને પહેલા સિદ્ધ નહોતા. એમ છે? આહાહા..! અનંતા સિદ્ધો અનાદિના છે, અને અનંતા સિદ્ધો વર્તમાન છે, અનંત સિદ્ધ ભવિષ્યમાં થશે. આહાહા..! અનંતા સિદ્ધની પ્રતીતિ ત્રણ કાળમાં વર્તનારની નિર્મળ દશા આ રીતે થઈ એનું જ્ઞાન કરીને એને નમસ્કાર. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ? વીતરાગ માર્ગ સૂક્ષ્મ છે, ભાઈ!

પછી ણમો લોએ સવ્વ ત્રિકાળવર્તી આઈરિયાણં. નમસ્કાર હો લોકને વિષે... લોકને વિષે છે ને એ? પંચ પરમેષ્ઠી. લોકયંતે ઇતિ લોક. જેમાં જીવ-અજીવ જણાય એને લોક કહીએ. એ લોકને વિષે છે, એ કાંઈ અલોકમાં નથી. સમજાણું? ણમો લોએ સવ્વ ત્રિકાળવર્તી આઈરિયાણં. આહાહા..! સ્વરૂપના સાધક, અનંતઆનંદના સ્વસંવેદન પ્રચુર વેદનના અનુભવીઓ એવા ત્રિકાળવર્તી-ત્રણે કાળમાં વર્તનારા-એવા આચાર્યોને સર્વને હું નમસ્કાર કરું છું. આહાહા..! ણમો લોએ સવ્વ ત્રિકાળવર્તી ઉવજ્ઝાયાણં. આ પાંચ પદની વ્યાખ્યા ચાલે છે. આહાહા..!

મુમુક્ષુ :- ઉપાધ્યાયની પદવી તો...

ઉત્તર :- કોણ આપે? આ ઉપાધ્યાયની પદવી અપાય છે ને? એમ કહે છે. એમ પદવી અપાતી હશે?

અંતરમાં આનંદનો નાથ જાગીને જેને અંતરમાં આનંદનું ઉગ્ર વેદન થયું છે, એના સમીપે જગતના પ્રાણી અભ્યાસ કરે. પણ એ પોતાને તો સમીપે જે અનંત આનંદ પ્રગટ્યો છે તે ઉપાધ્યાય છે. આહાહા..! જેના સ્વભાવમાં અનંતઆનંદ રેલમછેલ ભર્યો છે, પ્રભુ! આહાહા..! અપરિમિત, અમાપ આનંદ જેનું-ભગવાનઆત્માનું સ્વરૂપ છે, એનું જેણે ધ્યાન કરીને આચાર્યપદ પ્રાપ્ત કર્યું છે. આહાહા..! કોઈએ આચાર્યપદ આપ્યું છે એ નહિ.

મુમુક્ષુ :- ગુરુ આપે.

ઉત્તર :- કોણ આપે? એ તો વ્યવહારની વાતું છે. એનામાં જ ઉપાધ્યાય પદવી પ્રગટ

થવાની ક્ષયોપશમદશા હતી તે પ્રગટી છે. એ નથી આવતું? ક્ષયોપશમ. નથી ઓલામાં આવતું? 'દ્રવ્યસંગ્રહ'માં. 'દ્રવ્યસંગ્રહ'માં આવે છે. આહાહા..!

જેનો અતીન્દ્રિય આનંદનો નાથ જાગીને,.. ઉપાધ્યાય એને કહીએ જેનો અતીન્દ્રિય આનંદનો નાથ જાગીને ઉઠ્યો ને અંદરમાં દશામાં પ્રચુર આનંદનું વેદન વર્તે છે અને જેની દશા ત્રિકાળ સ્વરૂપની સમીપમાં વર્તે છે. અનાદિથી જે દૂર હતી, રાગ અને દ્વેષમાં વર્તતો હતો, એ ભગવાનઆત્મા પોતાના આનંદના નાથના શુદ્ધની સમીપમાં વર્તીને આનંદ વર્તે છે. એને અહીંયાં ઉપાધ્યાય કહેવામાં આવે છે. આ બહારની બધી ઉપાધ્યાયની પદવી આપે છે (એ નહિ). ભાન (નથી), હજી સમ્યગ્દર્શન કોને કહેવું એની ખબરું ન મળે અને થઈ ગયા આચાર્ય અને ઉપાધ્યાય. શું થાય? ભાઈ! આ તો જૈન પરમેશ્વરનો, વીતરાગ સર્વજ્ઞનો માર્ગ છે. આ કાંઈ આલીદુઆલી વચ્ચે પડે અને માર્ગ બનાવે, એવું છે નહિ.

અહીં કહે છે, એવા ણમો લોએ સવ્વ ત્રિકાળવર્તી ઉપાધ્યાય, એમ ણમો લોએ સવ્વ ત્રિકાળવર્તી સર્વ સાધુ. આહાહા..! પાછા એમાં સર્વ સાધુમાં એવો અર્થ કરે છે. પેલો 'સુશીલકુમાર' છે ને? સ્થાનકવાસીનો. ગયો હતો ને હમણા 'અમરેલી'? 'અમરેલી' શું કહેવાય 'અમેરિકા'. 'અમેરિકા'. એને અંગ્રેજી નથી આવડતું એટલે ત્યાં હિન્દી ભાષા કરી. થોડાઘણા માણસ ભેગા થતા. કાંઈ ન મળે. ત્યાંથી ચાલ્યો આવ્યો મુહપત્તિ સહિત. આ તે કાંઈ માર્ગ છે.

મુમુક્ષુ :- 'અમેરિકા'માં એને જોવા બહુ આવતા.

ઉત્તર :- અહીં નહોતા આવતા, કહે છે. અંગ્રેજી નહોતું આવડતું ને. હિન્દી બોલતા. અહીંના હોય ને સૌરાષ્ટ્રના, એ આવતા. એમ લખ્યું છે છાપામાં. થોડાઘણા ભેગા થતા સો-દોઢસો. હવે ચાલ્યો આવ્યો એમ કહે છે. એમાં-સ્થાનકવાસીમાં મોટી તકરાર છે. એના આચાર્યે એને સાધુમાંથી રદ કર્યો છે. અમથો સાધુ હતો કે દિ'? આહાહા..!

મુમુક્ષુ :- ...

ઉત્તર :- ઠીક છે. આહાહા..!

સાધુ તો એને કહીએ કે આનંદના નાથને-અંતરના સ્વરૂપને સાધે તેને સાધુ કહીએ. એ પંચમહાવ્રત પાળે અને નગ્નપણું (રાખે) એ કાંઈ સાધુપણું નથી. આહાહા..! એ પંચ મહાવ્રતની ક્રિયા એ તો અત્યારે છે પણ ક્યાં? પણ એ ક્રિયા હોય એ પણ કાંઈ સાધુપણું નથી. આહાહા..! સાધુપણું તો ભગવાનઆત્માનો આનંદનો સાગર અંદર ઝૂલે-ડોલે છે. આહાહા..! એવા આનંદના સાગરમાં ડૂબકી મારી, એકાગ્ર થઈ અને જેણે અતીન્દ્રિય આનંદનું સાધન પ્રગટ કર્યું છે... આહાહા..!

ઓલાએ હમણાં લીધું છે ને? ભાઈ! 'ચીમન ચકુ'એ અહીંનો વિરોધ લખ્યો છે. ભોળા માણસને આમ કરે છે. અહીં 'શ્રીમદ્'માં આમ કહ્યું છે. સાધન કરવા સોય. ક્યા સાધન? સાંભળને! એને બિચારાને... 'બૌદ્ધ' અને 'મહાવીર' બેય મોક્ષ પધાર્યા એમ કહે છે. હવે ક્યાં 'બૌદ્ધ' મિથ્યાદષ્ટિ, ક્યાં ભગવાન કેવળી!

મુમુક્ષુ :- એ તો ... ગયા.

ઉત્તર :- હા, ... ગયા. એને દુનિયામાં બહારની આબરુ... મરી જવાના બિચારા. પણ અત્યારે પુણ્ય હોય બહાર. આહાહા..! 'બૌદ્ધ' ભગવાન મોક્ષ પધાર્યા, 'મહાવીર' મોક્ષ પધાર્યા એમ કહે છે. અને એને શ્રદ્ધા તો વેદાંતની છે. જીવનનું રહસ્ય.

મુમુક્ષુ :- તો તો 'મહાવીર' પણ મોક્ષ ન પધારે અને 'બૌદ્ધ' પણ મોક્ષ ન પધારે.

ઉત્તર :- ઘડીકમાં એ કહે. ક્યાં ઠેકાણું છે એનું? એણે એમ કહ્યું છે કે આ સાધન જોઈએ. ક્યા સાધન? વ્યવહારના વિકલ્પ એ સાધન જ નથી. સાધન તો અંતર રાગથી ભિન્ન પાડીને પ્રજ્ઞારૂપી છીણીથી અનુભવથી સાધન કરે તેને સાધન કહ્યું છે. સમજાણું કાંઈ? પ્રજ્ઞા કરણ છે. ભગવાન! ઝીણી વાત છે, ભાઈ!

શુદ્ધ આનંદનો નાથ પ્રભુ સચ્ચિદાનંદ છે. એને ચાહે તો વ્યવહારરત્નત્રયનો દેવ-ગુરુ-શાસ્ત્રની શ્રદ્ધાનો રાગ હોય, પણ એ રાગથી ભિન્ન પાડે. આહાહા..! જ્ઞાનની પર્યાયની છીણી વડે. એટલે કે રાગ અને સ્વભાવની વચ્ચે સાંધ છે. આહાહા..! ત્રિકાળ આનંદનું દળ પ્રભુ અને રાગ વિકાર વિકલ્પ, બે વચ્ચે સાંધ છે, તડ છે. જેમ પથ્થરના મોટા દળ હોય છે એમાં વચ્ચે ઝીણી રગ હોય છે. ધોળી-લીલી રગ હોય. એ રગમાં કાણું પાડી સુરંગ મારે. ત્યારે પત્થરા જુદા જ અંદર છે. ઉપલા અને હેઠલા બે એક થયા જ નથી. પત્થરના દળમાં, બે પત્થર વચ્ચે ઝીણી રગ હોય છે. ઉપલા પત્થર અને હેઠલા પત્થર વચ્ચે આંતરો હોય છે. એમ આ ભગવાનઆત્મા એકલા સ્વભાવનું ધ્રુવ દળ અને વિકલ્પની-વિભાવની વૃત્તિઓનો વિકાર, બે વચ્ચે તડ છે-બે વચ્ચે સાંધ છે. રાગ અને સ્વભાવ બે એક થયા નથી. આહાહા..! અરે..! આવી વાતું. પથરામાં રગ હોય ઝીણી. અહીં વચ્ચે સાંધ હોય છે.

એટલે? કે ભગવાન જ્ઞાનસ્વભાવી આનંદપ્રભુ, જ્યારે જ્ઞાનની વર્તમાન પર્યાયને આ બાજુ વાળે છે ત્યારે રાગ અને બે ભિન્ન પડી જાય છે એટલે કે ભિન્ન છે. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ? જ્ઞાનની વર્તમાન દશા અને રાગ બે વચ્ચે ત્રડ-સંધિ છે-સાંધ છે. આહાહા..! તેથી વર્તમાન જ્ઞાનની દશાને એ તરફથી પાછી વાળતાં... વળે છે પાછી એનો અર્થ કે એમાં એકમેક નથી. સમજાણું કાંઈ? આવો માર્ગ ભારે, ભાઈ! આહાહા..! સમજાણું કાંઈ? સમજાણું કાંઈ એનો અર્થ પણ કરીએ છે ને? સમજાય એ તો કહ્યું. પણ કાંઈ એટલે કઈ પદ્ધતિથી કહેવાય છે એ ખ્યાલ આવે છે? આહાહા..! ભાઈ! આ તો સર્વજ્ઞ ત્રિલોકનાથ પરમાત્મપ્રકાશનું માંગલિક થાય છે આ તો. 'પરમાત્મપ્રકાશ' જ છે ને? એનું પહેલા માંગલિક કરે છે આ. સમજાણું કાંઈ?

ભાઈ! સાધુ કોને કહેવા? આહાહા..! જેને આત્માના આનંદનો સ્વાદ આવ્યો હોય છે. સમ્યગ્દર્શનમાં આત્માના આનંદનો સ્વાદ આવે. આહાહા..! કેમ? વસ્તુ છે એ આનંદમય છે અને વસ્તુને જ્યારે શ્રદ્ધામાં સાધી ત્યારે વસ્તુના જેટલા ગુણો છે એ બધાનો વ્યક્ત અંશ પર્યાયમાં પ્રગટ થાય અને વેદનમાં આવે. આહાહા..! સમ્યગ્દર્શનમાં પણ અતીન્દ્રિય આનંદસ્વરૂપ પ્રભુ, આ આત્મા, હોં! એનો સ્વાદ એને આવે, તો મુનિની શું વાત કરવી! ઓહોહો..! પાંચમી ગાથામાં કહ્યું છે. 'કુંદકુંદાચાર્ય' કહે છે, પ્રચુર સ્વસંવેદન અમારો વૈભવ છે. આ દુનિયાના ધૂળ ને શરીર ને વાણી અને બાયડી-છોકરા ને આ શું કહેવાય? ફર્નિચર.

એ વૈભવ કહેવાય છે ને? એ ધૂળના વૈભવ અજ્ઞાનીના છે. આહાહા..!

મુમુક્ષુ :- વૈભવ તો છે ને.

ઉત્તર :- ધૂળેય વૈભવ નથી. ત્યાં ગયા હતા ને? નહિ ઓલા પણે? 'શાંતાબેન'ના બનેવીની બેન છે ત્યાં 'મુંબઈ'. 'મણિભાઈ' કરીને છે. ત્યાં સાંજે આહાર કરવા ગયા હતા. પાંચ-છ કરોડ રૂપિયા. પાંચ કરોડ. એ આખું એક લીધું. શું કહેવાય એ? બ્લોક? મોટો બ્લોક ને બધે મખમલ પાથરેલા. પગલા બધે કરાવ્યા. મખમલ-મખમલ. લગભગ સાડા પાંચ લાખ રૂપિયાનું તો ફર્નિચર હશે. એમ કહેતા હતા. સમજાણું કાંઈ? એ મસાણમાં જ્યારે હાડકા એકલા હોય છે ને? હાડકામાં ફાસફૂસ.. શું કહે છે? ફોસ્ફરસ હોય છે આમ. ચમક ચમક થાય.

(જે) બહારના વૈભવનું મહાત્મ્ય આપે એ પોતાના વૈભવનો અનાદર કરે છે. આહાહા..! સમજાય છે કાંઈ? નિજ વૈભવ ત્રિકાળ છે એ તો છે. એ નહિ. પણ ત્રિકાળમાંથી અનંત આનંદની શાંતિ આદિ પ્રગટ કરી તો બેહદ... કાલે નહોતું કહ્યું જરી? ચારિત્રમાંથી. અક્ષય અમેય. આહાહા..! જેની સાધકદશા સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્ર એ પણ અક્ષય અને અમેય છે. ક્ષય ન થાય અને મર્યાદા વિનાની જેની દશા. વસ્તુ જેનો સ્વભાવ પ્રગટ્યો. આહાહા..! એના સ્વભાવના સાગર જ્યાંથી ભરતીમાં ઉછળ્યા. દરિયો જેમ ભરતીમાં કાંઠે ઉછળે. આહાહા..! એમ ભગવાનઆત્મા ત્રિકાળી આનંદના નાથ ઉપર શ્રદ્ધા અને જ્ઞાનનું જોર આપતાં, અંદરમાંથી આનંદની નિર્મળ પર્યાય ઉછળે. આહા! ભરતી આવે, ભરતી. અરે..અરે..! આવી વાતું.

મુમુક્ષુ :- હમણા તો ભરતીમાં ...

ઉત્તર :- આ જુઓને બહારનું કહે છે. આહાહા..!

આ વરસાદ છે ધોધમાર આત્માનો. આહાહા..! વસ્તુ સ્વભાવ, 'વસ્તુ સહાવો ધમ્મો.' એમ કીધું છે ને? વસ્તુનો સ્વભાવ તે ધર્મ, એમ કીધું છે ને? આવે છે ને? વસ્તુ જે ભગવાન, એનો સ્વભાવ તે ધર્મ. એટલે? એનો અનંતજ્ઞાન, અનંતઆનંદ આદિ જે સ્વભાવ તે ત્રિકાળ ધર્મ. હવે એ ધર્મનો આશ્રય લઈને પ્રગટ દશા થઈ તે ધર્મ. સમજાણું કાંઈ? આવી વાતું છે. વસ્તુ ભગવાનઆત્મા, એમાં જ્ઞાન-દર્શન આદિ અનંત શક્તિઓ વસેલી છે એ એનો ધર્મ. ધર્મી આત્મા અને એ એનો ત્રિકાળ ધર્મ. એ ત્રિકાળ ધર્મ અને ધર્મીને દૃષ્ટિમાં લઈને જે પર્યાયમાં આનંદની શાંતિનો વૈભવ પ્રગટ્યો એને ધર્મ કહીએ. આહાહા..! ભારે વાત, ભાઈ! સમજાણું કાંઈ? એ અહીં પહેલા સિદ્ધને નમસ્કાર કર્યો. પણ ત્રિકાળી સિદ્ધ, હોં! ત્રણ કાળ. આહાહા..! કેટલો વિશ્વાસ!

આપણે આવે છે ને 'સમયસાર'માં. '**वंदित्तु सव्व सिद्धे**' સર્વ સિદ્ધમાં બધા આવી ગયા. આહાહા..! એની શ્રદ્ધામાં અનંતા આત્માઓ અને અનંત આત્મા સિદ્ધ થઈ ગયા અને ત્રણકાળમાં જે થયા, થાશે અને થશે એ બધા સિદ્ધોને હું નમસ્કાર... નમસ્કાર... (કરું છું). આહાહા..!

'**નમસ્કાર કરકે મૈં પરમાત્મપ્રકાશકા વ્યાખ્યાન કરતા હૂં.**' આહાહા..! આ રીતે સિદ્ધ ભગવાન કેમ થયા, એમ કહીને સિદ્ધ જે થયા એને મારો નમસ્કાર છે. આહા! કારણ કે મારે

પણ સિદ્ધપદ પ્રાપ્ત કરવું છે. આહાહા..! અને હું પણ સિદ્ધ થવાનો છું. તો હું પણ ત્રિકાળી સિદ્ધમાં આવી જાઉં છું. આહાહા..! એટલે મને પણ નમસ્કાર હો. સમજાણું કાંઈ? આહાહા..! '**યહ સંક્ષેપ વ્યાખ્યાન કિયા. ઈસકે બાદ વિશેષ વ્યાખ્યાન કરતે હૈં.**' એ ટૂંકામાં કહ્યું. હવે એનું એક-એકનું વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ વધારે કરે છે.

'**જૈસે મેઘ-પટલસે બાહર નિકલી હુઈ સૂર્યકી કિરણોંકી પ્રભા પ્રબલ હોતી હૈ,...**' શું કહે છે? વાદળાની આડમાં સૂર્ય હોય છે. પણ વાદળા ખસી જાય ત્યારે એ સૂર્યકિરણોની પ્રભા પ્રબળ હોય છે. તીખી-તીખી. સૂર્યનો પ્રકાશ. '**મેઘ-પટલસે બાહર નિકલી હુઈ સૂર્યકી કિરણોંકી પ્રભા પ્રબલ હોતી હૈ, ઉસી તરહ કર્મરૂપ મેઘસમૂહકે વિલય હોનેપર...**' આહાહા..! અશુદ્ધ ભાવકર્મ અને દ્રવ્યકર્મ નિમિત્ત રૂપે. એનો વિલય હોવાથી. આહાહા..! ચૈતન્યસૂર્ય તો પ્રકાશમય અંદર બિરાજે છે. ચૈતન્યના પ્રકાશના નૂરનું તેજનું પૂર પ્રભુ છે. આહાહા..! એ આત્મા એટલે ચૈતન્ય સ્વભાવ, ચૈતન્ય સ્વભાવ, ચૈતન્ય પ્રકાશ સ્વભાવ, એના તેજનું એ પૂર છે. આહાહા..! એના પ્રકાશનું કિરણ નીકળ્યું કહે છે. અશુદ્ધતાના નાશથી, કર્મનું નિમિત્ત જડ ચીજ, એના અભાવથી અંદર સૂર્ય-જે શક્તિ હતી એમાંથી વ્યક્ત દશા પ્રગટ થઈ. આહાહા..! કેટલી કબુલાત છે એમાં! દ્રવ્યની કબુલાત, દ્રવ્યની શક્તિની કબુલાત અને દ્રવ્યમાં પ્રગટ થતી પર્યાયની કબુલાત. ત્રણની (કબુલાત). આહાહા..!

મુમુક્ષુ :- દ્રવ્ય-ગુણ અને પર્યાય.

ઉત્તર :- ત્રણેય આવી ગયા. આહાહા..!

કેમકે દ્રવ્ય છે એ શક્તિવાન છે અને એની શક્તિ છે એ ગુણ છે. ભલે નિગોદમાં જીવ હોય પણ શક્તિ તો એની જ્ઞાન-દર્શન શક્તિ સામર્થ્ય છે એ ક્યાં જાય છે? આહાહા..! ક્ષેત્ર ભલે ટૂંકું થઈ ગયું. ભાવ ટૂંકો નથી થયો શક્તિ. આહાહા..! આવું ક્યાં (મળે)? એને વિશ્વાસમાં આવવું જોઈએ કે આવો પ્રભુ આત્મા. જેનું શક્તિપણું, શક્તિવાનનું શક્તિપણું, સ્વભાવવાનનું સ્વભાવપણું, સામર્થ્યવાનનું સામર્થ્યપણું. આહાહા..! ભગવાનઆત્માનું તો અનંતજ્ઞાન, અનંતદર્શન, અનંતશાંતિ, આનંદ જેનું સામર્થ્યપણું છે, એ અશુદ્ધતાના અભાવથી એને શુદ્ધતાના કિરણો પ્રગટ્યા કહે છે. આહાહા..! આવી બધી ભાષા. આવો ઉપદેશ. ભાઈ! વીતરાગ માર્ગ સૂક્ષ્મ છે, પ્રભુ! દુનિયાએ તો બહારમાં કલ્પીને બેઠા. એ વસ્તુ નથી. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ?

કહે છે, '**મેઘ-પટલસે બાહર નિકલી હુઈ સૂર્યકી કિરણોં...**' આ તો દાખલો છે. '**ઉસી તરહ કર્મરૂપ મેઘસમૂહકે વિલય હોનેપર અત્યંત નિર્મલ કેવળજ્ઞાનાદિ અનંતચતુષ્ટયકી...**' આહાહા..! કેવળજ્ઞાન, કેવળદર્શન, કેવળઆનંદ. કેવળ એટલે પૂરું. એમ. આખો આનંદ, આખું જ્ઞાન, આખી શાંતિ, આખી સ્વચ્છતા. આહાહા..! એવા જે કેવળજ્ઞાનાદિ. '**અત્યંત નિર્મલ કેવળજ્ઞાનાદિ અનંતચતુષ્ટયકી પ્રગટતા સ્વરૂપ...**' ભગવાનને અનંત ચતુષ્ટય પ્રગટ્યા છે. એટલે? કે ભગવાનઆત્માનો સ્વભાવ ત્રિકાળ અનંત ચતુષ્ટયમય છે. આત્માનો સ્વભાવ ત્રિકાળ અનંત ચતુષ્ટય-અનંતજ્ઞાન, અનંતદર્શન, અનંતઆનંદ, અનંતવીર્ય. એવો અનંત

ચતુષ્ટય શક્તિ સંપન્ન પ્રભુ છે. એ અંદરની પર્યાયમાં અશુદ્ધતાનો નાશ કરીને કિરણ પ્રગટ્યું, એ અનંત ચતુષ્ટય પ્રગટયા. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ? ણમો અરિહંતાણં, ણમો સિદ્ધાણં (બોલે), લ્યો, થઈ ગયું. કોને કહેવા સિદ્ધ? કેમ થયા સિદ્ધ? એની ખબરું ન મળે. આહાહા..!

'**અનંતજ્ઞાન, અનંતદર્શન, અનંતસુખ અને અનંતવીર્ય...**' છે? '**પરમાત્મા પરિણત હુએ હૈં.**' આહાહા..! એક તો અસ્તિપણે પરમાત્મસ્વરૂપ ભગવાનઆત્મા અસ્તિપણે, મોજૂદગીપણે ત્રિકાળ અનંત જ્ઞાન-દર્શન-વીર્ય અને આનંદ તો હતો. વસ્તુ છે એની શક્તિઓ અનંત એટલે જેનો અંત નહિ એવી બેહદ શક્તિઓ અનંત ચતુષ્ટય હતી. આહાહા..! એનું ધ્યાન કરીને. એમ આવ્યું ને? એનો અર્થ છે આ તો. આહાહા..! અનંત કેવળજ્ઞાન, અનંત દર્શન, અનંતસુખ, અનંતવીર્ય, અનંત ચતુષ્ટય (સ્વરૂપે) '**પરમાત્મા પરિણત હુએ હૈં.**' આહાહા..! જેની વર્તમાન પર્યાયમાં એટલે અવસ્થામાં-હાલતમાં-દશામાં, જે શક્તિરૂપે અનંત ચતુષ્ટય હતા-અનંતજ્ઞાન, દર્શન, આનંદ ને વીર્ય, એ પર્યાયરૂપે ચતુષ્ટય પ્રગટ્યા. આહાહા..!

'**પરમાત્મા પરિણત હુએ હૈં. અનંતચતુષ્ટય અર્થાત્ અનંતજ્ઞાન, અનંતદર્શન, અનંતસુખ, અનંતવીર્ય, યે અનંતચતુષ્ટય સબ પ્રકાર અંગીકાર કરને યોગ્ય હૈં.**' આહાહા..! કહે છે કે એ અનંત ચતુષ્ટય જે પ્રગટ્યા એ ઉપાદેય અને આત્માને આદર કરવા લાયક છે. સમજાણું કાંઈ?

મુમુક્ષુ :- એ તો પર્યાય છે.

ઉત્તર :- સાધ્ય એ છે ને? ધ્યેય દ્રવ્ય છે પણ સાધ્ય તો એ છે ને. 'સમયસાર'માં છેલ્લું આવે છે. સાધ્ય નામ પૂર્ણ કેવળજ્ઞાનાદિ સિદ્ધ પરમાત્મા તે સાધ્ય છે. સમજાણું કાંઈ? અને એવું પણ આવે છે કે અનંતસુખનું જેને ભાન થયું છે, એ અનંતસુખરૂપી પરમાત્માને ઉપાદેય માને છે. અનંત આનંદનો નાથ પ્રભુ જેને અનંત આનંદનો સ્વાદ અંદર આવ્યો છે, એ જ અનંત આનંદમય પરમાત્માને ઉપાદેય માને છે. સમજાણું કાંઈ? અરે..! ક્યાં જગત રખડે. ક્યાં રખડવાનો માર્ગ જુદો. રખડવાનું અટકાવવાનો માર્ગ બીજો છે. આહાહા..!

'**યે અનંતચતુષ્ટય સબ પ્રકાર અંગીકાર કરને યોગ્ય હૈં,...**' આહાહા..! '**તથા લોકાલોકકે પ્રકાશનકો સમર્થ હૈં.**' કેવળજ્ઞાન. '**જબ સિદ્ધપરમેષ્ઠી અનંતચતુષ્ટરૂપ પરિણમે, તબ કાર્ય-સમયસાર હુએ.**' લ્યો! શું કહ્યું ઈ? પર્યાયમાં, પરિણતિમાં અનંતજ્ઞાન, દર્શન પ્રગટ થયા ત્યારે અનંત ચતુષ્ટય પર્યાયમાં પ્રગટ્યા એ કાર્ય સમયસાર થયા. અને વસ્તુ છે એ કારણસમયસાર. ત્રિકાળ વસ્તુ છે એ કારણસમયસાર.

મુમુક્ષુ :- પર્યાયને કારણસમયસાર કહેવાય છે.

ઉત્તર :- એ પણ કહેવાય છે. પણ અત્યારે અહીં એ નથી લેવું. અત્યારે પ્રગટ દશાને કાર્યસમયસાર કહી. એના ઉપાયને પણ કારણસમયસાર કહેવાય છે. પણ આ તો ત્રિકાળ કારણસમયસાર. આહા..!

'**અંતરાત્મ અવસ્થામેં કારણ-સમયસાર થે.**' જોયું! શું કીધું ઈ? ઓલા કહેતા હતા

ને? ભાઈ! 'ત્રિભુવનભાઈ'. આ કારણસમયસાર કહો (છો) તો કાર્ય હોવું જોઈએ. અહીં એ ભાષા લીધી, જોયું! શું કીધું? **'અંતરાત્મ અવસ્થામેં કારણ-સમયસાર થે.'** આમ તો કારણસમય ત્રિકાળ છે પણ ત્રિકાળનો અનુભવ થયો ત્યારે એ કારણસમયસાર એને ખ્યાલમાં આવ્યો. તેથી કહ્યું **'અંતરાત્મ અવસ્થામેં કારણ-સમયસાર થે.'** એટલે કે પર્યાયમાં કારણસમયસાર જે સાધ્યનું પ્રગટ્યું એને પણ કારણસમયસાર કહીએ અને ત્રિકાળીને પણ અંતરાત્મામાં ત્રિકાળી કારણસમયસારનું ભાન થયું એને ત્રિકાળ કારણસમયસાર કહીએ. જેને ભાન નથી એને કારણસમયસાર ક્યાં આવ્યું? અરે..! આવી વાતું આ. સમજાણું કાંઈ?

'અંતરાત્મ અવસ્થામેં કારણ-સમયસાર થે. જબ કાર્યસમયસાર હુએ તબ સિદ્ધપર્યાય પરિણતિકી પ્રગટતારૂપકર શુદ્ધ પરમાત્મા હુએ.' અંતરાત્મા સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન વખતે એ કારણસમયસાર પર્યાય હતી. એનું ત્રિકાળી કારણ તો ત્યારે બેઠું ત્યારે એને કારણ પર્યાય થઈ ને? ત્રિકાળી વસ્તુ જે કારણપ્રભુ ધ્રુવ એ છે તો ખરું પણ છે એ અનુભવમાં આવ્યું ત્યારે કારણસમયસાર એને બેઠું. ત્યારે પર્યાયને કારણસમયસાર, કાર્યસમયસારનો ઉપાય કારણસમયસાર કહેવામાં આવ્યું. ઓલી પર્યાયને, હોં! આહાહા..! કીધું ને? **'અંતરાત્મ અવસ્થામેં કારણ-સમયસાર થે.'** એટલે પર્યાયમાં પ્રગટ થયો છે એને કારણસમયસાર કહેવામાં આવે છે. આવી ભાષા કોઈ દિ' સાંભળી ન હોય. કારણસમયસાર અને કાર્યસમયસાર. ઓલું તો ઈચ્છામી પડિકમણું કરવું અને તસ્સઉતરી કરણેણં ને કરેમિ ભંતે સામાયિક. આ થઈ ગઈ સામાયિક. અરે..! ધૂળેય નથી, સાંભળને! હજી સમ્યગ્દર્શનના ભાન નથી ત્યાં સામાયિક આવી ક્યાંથી? સમજાણું કાંઈ? આહાહા..!

'અંતરાત્મ અવસ્થામેં કારણ-સમયસાર થે.' એનો અર્થ બે. કે અંતર આત્મામાં વર્તમાન પર્યાય પ્રગટી એ કારણસમયસાર. પણ એને કારણ સમયસાર ત્રિકાળ છે એ અનુભવમાં આવ્યો માટે પર્યાયમાં કારણસમયસાર કહેવામાં આવે છે. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ? બધી ભાષા ફેર, ભાવ ફેર આ કાંઈ નવો ધર્મ હશે આવો? એય..! 'કાંતિભાઈ'! 'સોનગઢ'વાળાએ નવો ધર્મ કાઢ્યો, એમ લોકો કહે છે. ભાઈ! તેં સાંભળ્યું નથી, પ્રભુ! ધર્મ તો અનાદિનો આ જ છે. તેં સાંભળ્યો નથી એટલે તારા માટે નવો લાગે. આહાહા..!

અહીં પરમાત્માને નમસ્કાર કરતા પરમાત્મપર્યાય પ્રગટી તેને કાર્યસમયસાર કહ્યું. અને અંતરાત્મ દશામાં પર્યાય પ્રગટી તેને કારણસમયસાર (કહ્યું). એ કારણસમયસારનું ફળ કાર્યસમયસાર. એમ. પણ એ કારણ પર્યાયમાં, કારણસમયસારમાં અંતરાત્મા પૂર્ણ છે તેનું જ્ઞાન થયું છે, એની પ્રતીત થઈ છે, એ જ્ઞાનમાં જણાઈ ગયો છે માટે તેની પર્યાયમાં કારણસમયસાર કહેવામાં આવે છે. આહાહા..! શું કહ્યું ઈ? આ તો હવે ટાઢા પહોરનું અહીં તો છે ને! શાંતિથી... આહાહા..!

ભગવાન! તારું સ્વરૂપ તો કારણસમયસારરૂપે ત્રિકાળ છે. કારણપરમાત્મા તરીકે તારું સ્વરૂપ ત્રિકાળ છે. પણ એ કારણપરમાત્માને જેણે અંતર ધ્યાનથી સ્વીકાર્યો ત્યારે તેની પર્યાયમાં કાર્યસમયસાર એવો પરમાત્મા, એનું કારણ પ્રગટ થયું. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ?

હવે એક કલાકમાં કંઈક જાતની વાતું આવે. 'ગિરીશ'! ત્યાં તારા બાપના પૈસા-દેવા ને લેવા એમાં કાંઈ બહુ નવું કાંઈ હોય નહિ. આ પૈસા દીધા અને લીધા. કોઈકને સવા ટકે ને કોઈકને દોઢ ટકા. હવે એમાં કોઈ તર્ક પણ નવા આવે નહિ. અમારે 'હીરાભાઈ' કહેતા. 'હીરાચંદભાઈ' માસ્તર. અમે માસ્તર બધા... શું કહેવાય એ? પંતુ કહેવાઈએ. કેમ કે અમારે એનું એ શીખવવું. એમાં કાંઈ નવું હોય નહિ. તર્ક કાંઈ નવા કરવાના ન હોય. આનું આ ને આનું આ, આ આનો ઈતિહાસ ને આ ફલાણું ને ઢીંકણું. અમે તો બધા પતું છીએ. વેપારીઓને તો કાંઈક તર્ક પણ કરવો પડે, વકીલોને તો વધારે તર્ક કરવો પડે. આહાહા..!

અહીં તો પરમાત્મા કહે છે એ બધા તર્કની પાર એવો ભગવાન અંદર બિરાજે છે. એને જેણે સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાનમાં એનો-પૂર્ણાનંદનો આદર કરી અને જેને સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન પ્રગટ થયું છે, તે જીવને કારણસમયસાર એટલે કે મોક્ષના માર્ગની પર્યાય પ્રગટી, માર્ગ પ્રગટ્યો. માર્ગ એટલે કારણ. માર્ગ એટલે કારણ. માર્ગ એટલે કારણ અને ફળ એ કાર્ય. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ? માર્ગ સમજવાની ભાઈ! ઝીણવટ છે, બાપુ! અનંતકાળમાં એણે આત્મા આવો પૂર્ણ શુદ્ધ ચૈતન્ય છે એની સામું એણે જોયું નથી. એની સામું જોવે ત્યારે તેનો સ્વીકાર કરવામાં આવે. પણ એની સામું જોયું નથી અને પર્યાયમાં-અવસ્થામાં અવસ્થા સામું જોયું. કાં અવસ્થા લંબાય તો એ રાગ સામું જોવે. એ તો પર્યાયબુદ્ધિ-મિથ્યાબુદ્ધિ છે. આહાહા..!

સમ્યગ્દર્શનની બુદ્ધિનું જ્ઞાન ત્યારે થાય... આહાહા..! ધર્મની પહેલી સીઢી અંતરાત્મા. એટલે કે અંતરાત્મા જેવી પૂર્ણ ચીજ છે, એને જેણે સ્વીકારી તે પર્યાયમાં અંતરાત્મા થયો. આહાહા..! સમજાણું કાંઈ? આવી ભાષા અને આ બધું... સંપ્રદાયમાં તમે આવી વાત કોઈ દિ' સાંભળી છે? 'જયંતિભાઈ'! પણ ત્યાં તત્ત્વ જ ક્યાં છે સંપ્રદાયમાં. ક્રિયાકાંડના ઢસરડા છે એકલા. આહાહા..! આ વસ્તુ સર્વજ્ઞ પરમાત્મા ત્રિલોકનાથ તીર્થંકરદેવ, એણે કહેલી ચીજ છે ઈ આ છે. આહા..!

'જબ કાર્યસમયસાર હુએ તબ સિદ્ધપર્યાય પરિણતિકી પ્રગટતા રૂપકર શુદ્ધ પરમાત્મા હુએ.' લ્યો! જ્યારે અંતરાત્મા થયો, પૂર્ણાનંદના નાથનું અંતર સ્વરૂપ જે છે, એનું સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાનમાં જ્યાં ભાન કર્યું ત્યારે એ અંતરાત્મા કારણરૂપે થયો. એના કાર્યરૂપે સિદ્ધ અનંતચતુષ્ટય પ્રગટ્યા. એ અંતરાત્મા અવસ્થા કહો કે મોક્ષનો માર્ગ કહો. આહાહા..! સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્રાણી મોક્ષમાર્ગ છે ને? એ અંતરાત્મા કહો કે એ માર્ગ કહો. વસ્તુ જે ત્રિકાળી ભગવાન, એની શ્રદ્ધા, એનું જ્ઞાન અને એમાં રમણતા એ અંતરાત્મદશા એટલે મોક્ષમાર્ગની અવસ્થા. એના ફળ તરીકે સિદ્ધ ભગવાન કાર્યસમયસાર થયા. કાર્યસમયસાર, કારણસમયસાર કોને કહેવું એ પણ સ્વરૂપ ભેગું આવી ગયું. અને ધ્યનાગ્નિ કરવી એ ધ્યાન પોતે કારણસમયસાર છે. સમજાણું કાંઈ? કેમકે ત્રિકાળી ભગવાન કારણસમયસારનું ધ્યાન કર્યું તો પર્યાયમાં કારણસમયસાર થયો. હતો તે થયો. એ પૂર્ણ કાર્ય થાય તેને સિદ્ધ ભગવાન (કહે છે). એવા સિદ્ધ ભગવાનને નમસ્કાર કરીને હું 'પરમાત્મપ્રકાશ' કહેવા માગું છું, એમ કહેશે.

(શ્રોતા : પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ)